RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

» ARJUN BATCH «

कक्षा-12 | राजनीति विज्ञान

सत्ता के समकालीन केंद्र

CHAPTER 02 | PART-7

LIVE | 15 सितंबर 2026 || 06:00 PM



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

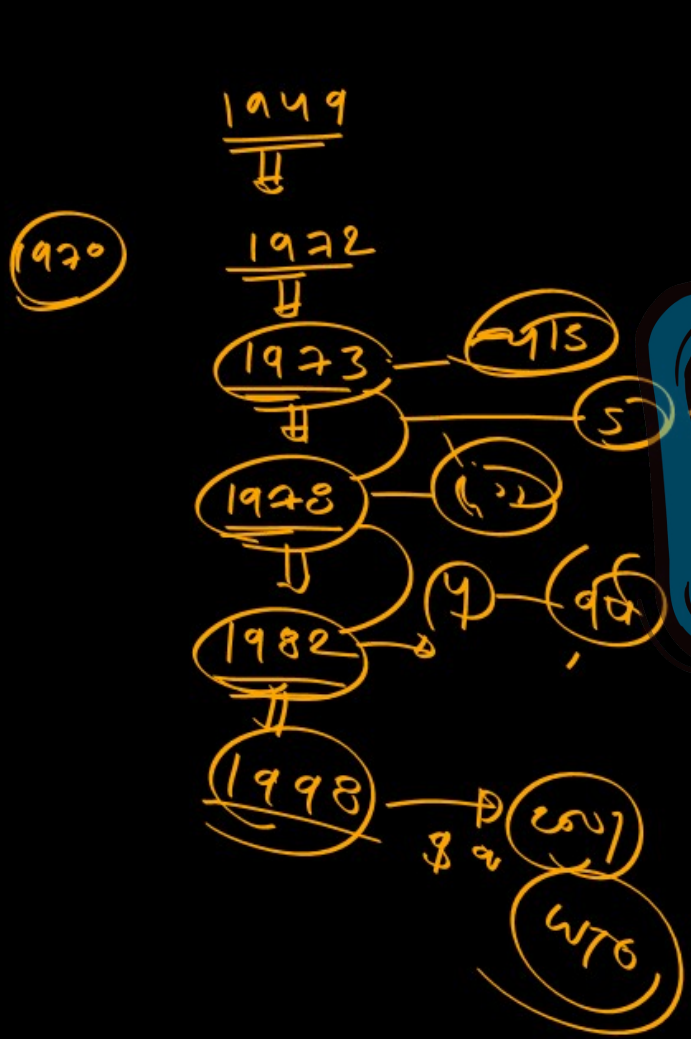
आज क्या पढेंगे ?

1. चीन की साथ भारत के संबंध



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



परिवर्तन

1972 में अमरीका से संबंध बनाकर अपने राजनैतिक और आर्थिक एकांतवास को खत्म किया।

1973 में प्रधानमंत्री चाऊ एनलाई ने कृषि, उद्योग सेना और विज्ञान प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण के चार प्रस्ताव रखें

1978 में तत्कालीन नेता देंग श्याओपेंग ने खुले द्वार की नीति की घोषणा की।

1982 में खेती का निजीकरण किया।

1988 में उद्योगों का निजीकरण।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

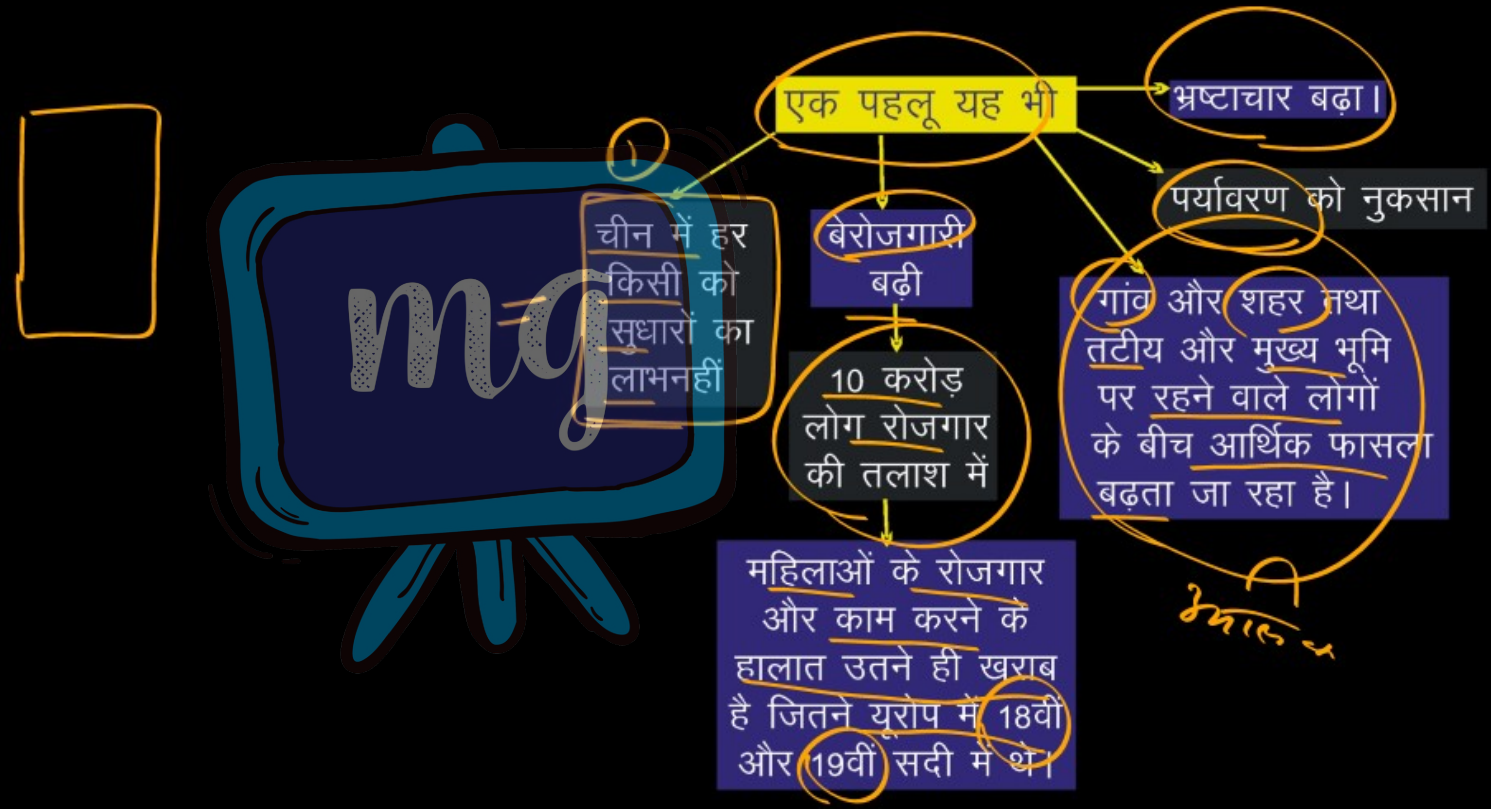
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

परिणाम :-

- कृषि उत्पादों तथा ग्रामीण आय में उल्लेखनीय वृद्धि।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था से निजी बचत बढ़ी और इससे ग्रामीण उद्योगों की तादाद तेजी से बढ़ी।
- उद्योग और कृषि दोनों में ही चीन की वृद्धि दर तेज रही।
- व्यापार के नये कानून तथा विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण से विदेश व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- चीन पूरे विश्व में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए सबसे आकर्षक देश बनकर उभरा।
- चीन के पास अब विदेशी मुद्रा का विशाल भण्डार है, इसके दम पर चीन अब दूसरे देशों में निवेश कर रहा है।
- 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन में शामिल हो गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

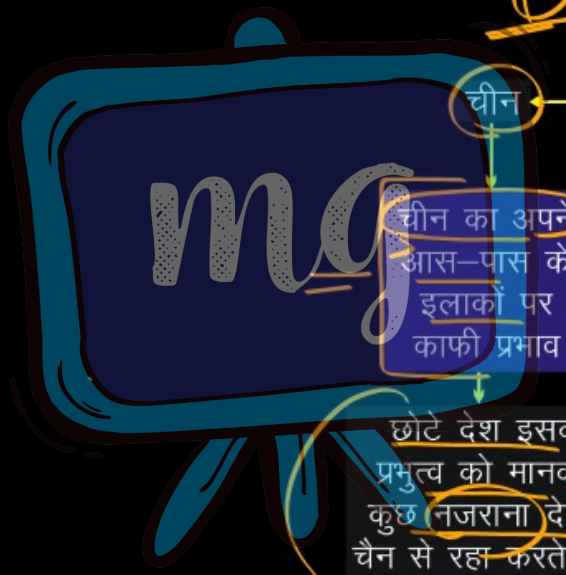
निष्कर्ष :-

- क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर चीन एक ऐसी जबरदस्त आर्थिक शक्ति बनकर उभरा है कि उसका सभी लोहा मानने लगे हैं।
- अपने व्यावसायिक साझीदारों पर चीन का जबरदस्त प्रभाव बन चुका है।
- यही कारण है कि जापान, अमरीका, असियान और रूस सभी व्यापार के आगे चीन से बाकी विवादों को भुला चुके हैं।
- 1997 के वित्तीय संकट के बाद असियान देशों की अर्थव्यवस्था को टिकाये रखने में चीन के आर्थिक उभार ने काफी मदद की।
- लातिनी अमरीका और अफ्रीका में निवेश और मदद की नीतियां बताती हैं कि विकासशील देशों के मामले में चीन एक विश्व शक्ति के रूप में उभरता जा रहा है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चीन के साथ भारत के संबंध



ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

पश्चिमी साम्राज्यवाद के उदय से पहले दोनों ही एशिया की महाशक्ति

चीन

- चीन का अपने आस–पास के इलाकों पर काफी प्रभाव
  - छोटे देश इसके प्रभुत्व को मानकर कुछ नजराना देकर चैन से रहा करते थे।
  - संगोलिया, कोरिया हिन्द–चीन के कुछ इलाके और तिब्बत इसकी आधीनता मानते थे।
- अपने प्रभाव–क्षेत्र में कभी नहीं टकराये।
- दोनों के बीच प्रत्यक्ष राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंध नहीं।
  - दोनों एक–दूसरे को जान नहीं सके।

भारत

- भारत के राजवंशों का प्रभाव अपने राज्य से बाहर भी।
- प्रभाव सिर्फ राजनैतिक ही नहीं आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक भी था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 20वीं सदी में भारत और चीन एक दूसरे से टकराये - तो विदेश नीति निर्माण में मुश्किलें।

उम्मीद

- भारत में अंग्रेजी राज समाप्त होने और चीन द्वारा विदेशी शक्तियों को निकाल कर बाहर करने से।
- दोनों देश साथ आकर विकासशील दुनिया और खासतौर एशिया के भविष्य को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।



समस्याऐं :-

- 1950 में चीन द्वारा तिब्बत को हड़पने तथा भारत चीन सीमा पर बस्तियां बनाने के फैसले से दोनों देशों के बीच संबंध गड़बड़।
- 1962 में भारत-चीन युद्ध।
- 1976 तक दोनों के मध्य कूटनैतिक संबंध समाप्त।
- 1981 में सीमा विवादों को दूर करने के लिए वार्ताओं की श्रृंखला शुरू की गयी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद :-

- दिसम्बर 1988 में राजीव गांधी द्वारा चीन का दौरा करने से भारत-चीन संबंधों को सुधारने के प्रयासों को बढ़ावा मिला।
- दोनों देशों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और व्यापार के लिए सीमा पर चार पोस्ट खोलने के लिए समझौते किये।
- 1999 से भारत और चीन के बीच व्यापार 30 फीसदी की सालाना दर से बढ़ रहा है।
- परिवहन और संचार मार्गों की बढ़ोत्तरी, समान आर्थिक हित तथा एक जैसे वैश्विक सरोकारों के कारण भारत और चीन के बीच संबंधों को ज्यादा सकारात्मक तथा मजबूत बनाने में मदद मिली है।